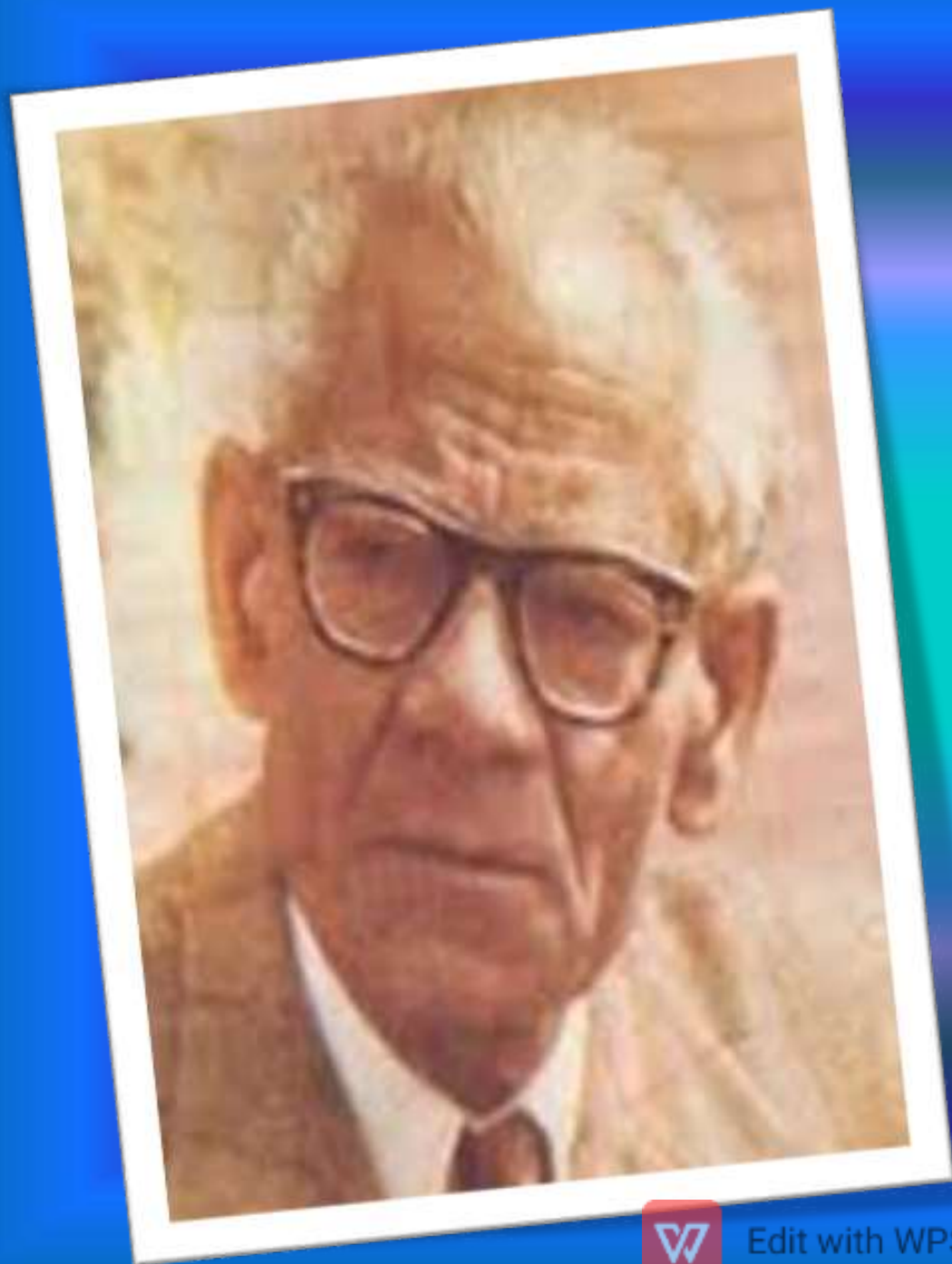


दुख का अधिकार

यशपाल



Edit with WPS Office



Edit with WPS Office

लेखक परिचय

यशपाल जी का जन्म ३ दिसंबर १९०३ में फिरोजपुर छावनी में हुआ था। आरम्भिक शिक्षा लाहौर में हुई। भगतसिंह के साथी थे। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं-देशद्रोही, पार्टी कामरेड, दादा कामरेड, झूठा सच। उपन्यास-ज्ञान दान, पिंजड़े की उड़ान।, इन्हें साहित्य अकादमी इनाम मिला।



पाठ का सार

► लेखक ने बताया है कि मनुष्य की पोशाकें विभिन्न श्रेणियों में विभाजित करती हैं। पोशाक के कारण ही मनुष्य झुककर गरीब की व्यथा नहीं सुन सकता।



► लोगो की गरीबों के प्रति मानसिकता को लेखक ने दिखाया है कि लोग गरीबों से कितना बुरा व्यवहार करते हैं और अमीरों से कितना अच्छा।



► एक बूढ़ी महिला के बेटे की साँप के डसने से मौत हो जाती है। घर में पोता, पोती, बहू भूख से बिलबिला रहे हैं। मजबूरी के कारण बेटे की मौत के अगले ही दिन बुढ़िया को खरबूजे बेचने जाना पड़ता है।



► बाज़ार के लोग बुढ़िया को ताने देते है | वह घुटनों में सिर देकर फफक-फफककर रोती है। आसपास के लोगो ने लेखक को उसके बेटे के बारे में बताया। लेखक अपनी पोशाक के कारण बुढ़िया का दुख नहीं बाँट सके।



►लेखक को संभ्रांत महिला की याद आई।जो उसके पड़ोस में रहती थी। उसका भी जवान बेटा मरा था।अढ़ाई महीने वह बिस्तर से नहीं उठी। थोड़ी-थोड़ी देर बाद वह हो बेहोश जाती थी। डॉक्टर उसके पास बैठे रहते। लोग उसका दुख बांटते।



► वास्तव में लेखक ने यह बताना चाहा है कि आज के समय में केवल अमीरों को दुख मनाने का अधिकार है, गरीबों को नहीं। गरीब तो अपनी मजबूरियों में उलझा रहता है।

